Answers to RHB–DS2/Set-2

1. (*i*) (ख) कल-कारखानों और तेज़ वाहनों के कारण

(*ii*) (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

(*iii*) (ग) युक्तिसंगत समाधान खोजकर अमल करना

(*iv*) (घ) पर्यावरण की आवश्यकता

(*v*) (घ) गंदगी न फैलाकर वृक्ष लगाए जाएँगे।

2. (*i*) (ख) उन्हें कार्य में सफलता नहीं मिलती।

(*ii*) (क) परिश्रम तथा कार्यकुशलता के बीच संबंध

(*iii*) (ग) कार्य में योग्यता व निपुणता प्राप्त करने की कोशिश न करना

(*iv*) (ग) परिश्रम के महत्व को दर्शाना

(*v*) (ग) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

3. (*i*) (क) संज्ञा पदबंध

(*ii*) (क) उतरने नहीं देते थे

(*iii*) (ख) गिन्नी का सोना शुद्ध सोने से ज़्यादा चमकता है और मजबूत भी होता है।

(*iv*) (ग) विशेषण-पदबंध

(*v*) (घ) क्रियाविशेषण पदबंध

4. (*i*) (क) शैलेंद्र ने 'तीसरी कसम' को अपनी भावप्रवणता का सर्वश्रेष्ठ तथ्य प्रदान किया।

(*ii*) (क) सरल वाक्य

(*iii*) (घ) 1–(*i*), 2–(*iii*), 3–(*ii*)

(*iv*) (क) एक ज़माना था कि लोग आठवाँ दरजा पास करके नायब तहसीलदार हो जाते थे।

(*v*) (ख) संयुक्त वाक्य

5. (*i*) (ग) कर्मधारय समास

(*ii*) (घ) महान है जो आत्मा

(*iii*) (ख) (*i*) और (*iii*)

(*iv*) (ख) जैसा संभव हो – अव्ययीभाव समास

(*v*) (क) पशु का पर्व – तत्पुरुष समास

6. (*i*) (ग) अंधे के हाथ बटेर लगना – अयोग्य को इच्छित वस्तु की प्राप्ति होना

(*ii*) (ग) अक्ल पर पत्थर पड़ना

(*iii*) (ख) हैरान रह जाना

(*iv*) (घ) सूरज को दीया दिखाना

(*v*) (क) टेढ़ी उँगली से घी निकालना

(*vi*) (ख) लाल-पीला होना

7. (*i*) (क) एकता की भावना

(*ii*) (ख) ईश्वर के लिए

(*iii*) (ग) सभी प्राणियों की सहायता करना मनुष्य का धर्म है।

(*iv*) (ख) सभी मनुष्य परमपिता ईश्वर की संतान हैं।

(*v*) (घ) सभी की सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

8. (*i*) (ग) मनुष्य के हृदय में ऊँची आकांक्षाएँ होती हैं।

(*ii*) (ख) जब मनुष्य के हृदय में ज्ञान का प्रादुर्भाव होता है तब अहंकार नष्ट हो जाता है।

9. (*i*) (क) उनके आदर्शवादी होने का

(*ii*) (ग) केवल (*iv*)

(*iii*) (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

(*iv*) (क) शैलेंद्र के आदर्शवादी होने के कारण

(*v*) (ग) 'तीसरी कसम' एक महान फ़िल्म है।

10. (*i*) (घ) (*ii*) और (*iii*)

(*ii*) (ख) रूढ़िवादी मान्यताओं का बहिष्कार कर प्रगतिशील विचारों को अपनाना चाहिए।

11. (क) हमारी पाठ्यपुस्तक में लेखक निदा फ़ाज़ली द्वारा रचित पाठ 'अब कहाँ दूसरों के दुख से दुखी होने वाले' पाठ में मानवीय संवेदनाओं को उल्लेखित करते हुए पहले के समय तथा अब के समय में लोगों की भावनाओं के बदलाव का वर्णन किया गया है। आज मनुष्य तथा प्रकृति के बीच के भावनात्मक संबंध का ह्रास हुआ है। अपने स्वार्थ के लिए मनुष्य ने प्रकृति के साथ खिलवाड़ करना प्रारंभ कर दिया है। इसी खिलवाड़ का अत्यंत भयावह परिणाम सभी को भुगतना पड़ता है। मनुष्य ने पेड़ों को काटकर बड़ी-बड़ी बिल्डिंग्स बनाना प्रारंभ कर दिया है। इसके परिणामस्वरूप पशु-पक्षियों से उनका आशियाना छिन गया है। वे बेघर हो गए हैं। मनुष्य द्वारा किए गए इसी अपराध का परिणाम है कि आज हमें प्रकृति की मार, तूफान, ग्लोबल वार्मिंग तथा सुनामी के रूप में भुगतना पड़ता है।

(ख) लेखक लीलाधर मंडलोई जी द्वारा रचित कहानी 'तताँरा-वामीरो कथा' अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की लोककथा पर आधारित है। प्रस्तुत कहानी हमें यह सीख देती है कि समाज की प्रगति में बाधक होने वाली रूढ़िवादी मान्यताओं का बहिष्कार करना ही उचित है। गाँव की परंपरा के अनुसार दो अलग-अलग गाँवों के बीच वैवाहिक संबंध नहीं हो सकता था। तताँरा तथा वामीरो दोनों अलग-अलग गाँवों में रहते थे। इस कारण गाँववालों ने उनको प्रेम-संबंध का विरोध कर तताँरा को अपमानित किया। क्रोध द्वारा तताँरा अपना नियंत्रण खो बैठा जिस कारण उसका अंत हो गया। वामीरो भी इस घटना को सहन न कर सकी और एक दिन उसका भी कोई पता नहीं चला। दोनों के दुखद अंत के बाद गाँववालों को पछतावा हुआ और उन्होंने नियमों में बदलाव किए। यदि यह बदलाव पहले हो जाता तो तताँरा और वामीरो का इस प्रकार दुखद अंत नहीं होता। इस प्रकार की घटना समाज की उन्नति के लिए घातक होती है।

(ग) मनुष्य न तो भविष्य को जान सकता है और न ही बीते हुए समय को बदल सकता है। फिर भी वह उसी में खोया रहता है। उसी के विषय में सोचकर अपने वर्तमान समय को नष्ट करता है। वास्तव में मनुष्य का अधिकार केवल उसके वर्तमान समय पर होता है। बीते हुए समय तथा आने वाले समय के बारे में सोचना गलत है। इसीलिए लेखक ने केवल वर्तमान को ही सत्य मानकर भूत तथा भविष्य को मिथ्या कहा है। इसमें उलझ कर मनुष्य अपना मानसिक संतुलन बिगाड़ देता है।

12. (क) कवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने अपनी कविता 'मनुष्यता' में मानव मूल्यों का उल्लेख करते हुए समाज को मनुष्यता का धर्म सिखाया है। परोपकार कर सबको समान भाव से देखना ही मनुष्यता का धर्म है। मनुष्य को उदार रहते हुए सभी प्राणियों के हित के विषय में सोचना चाहिए। केवल अपने हित के विषय में सोचना पशु प्रवृत्ति है। अतः मनुष्य के भीतर स्वार्थ की भावना नहीं होनी चाहिए। कवि ने महान व्यक्तियों का उदाहरण देते हुए कहा है कि जिस प्रकार रंतिदेव ने स्वयं भूखे रहकर भोजन का दान किया, महर्षि दधीचि ने परहित के लिए अपने प्राणों का बलिदान किया, राजा क्षितीश ने दूसरे प्राणी के लिए अपने शरीर का मांस दान किया तथा महान वीर कर्ण ने स्वार्थ रहित होकर अपना कवच और कुण्डल दान कर दिया था। इसी प्रकार इन सभी से प्रेरित हो हमें भी परोपकार को अपनाकर समाज की उन्नति में अपना योगदान देना चाहिए।

(ख) वीरेन डंगवाल जी के द्वारा रचित कविता 'तोप' हमें यह याद दिलाती है कि किस प्रकार अंग्रेज़ों ने हमारे देश पर बर्बरतापूर्वक शासन किया। परंतु समय और शक्ति एक समान नहीं रहती। आज अंग्रेजी शासन का अंत हो गया है। किसी समय में अंग्रेजों ने तोप से हमारे देश के स्वतंत्रता सेनानियों को मौत के घाट उतार दिया था। तोप प्रतीक है उस अत्याचार का जिसकी शक्ति समय के साथ समाप्त हो गई है। आज यह केवल प्रदर्शनी की वस्तु ही रह गई है। आज इसे विरासत में मिली धरोहर के रूप में दिखावे के लिए कंपनी बाग के मुहाने पर रखा गया है। यह कविता हमें यही संदेश देती है कि कितनी भी बड़ी शक्ति क्यों न हो एक-न-एक दिन उसका अंत निश्चित है। अत्याचार अधिक समय तक अपना प्रभाव नहीं दिखा सकता।

(ग) कबीरदास जी तथा मीराबाई जी दोनों ही भक्तिकालीन कवि हैं। जहाँ एक तरफ कबीरदास जी निर्गुण धारा के कवि हैं, वहीं दूसरी ओर मीराबाई जी सगुण धारा की कवयित्री हैं। कबीरदास जी ने ईश्वर के निराकार रूप की आराधना की है तथा मूर्ति पूजा एवं बाह्य आडंबरों का विरोध किया है। कबीरदास जी ने ज्ञान को अधिक महत्व दिया है। उनके अनुसार जब मनुष्य के अंतःमन में ज्ञान का प्रादुर्भाव होता है तभी उसे ईश्वर की प्राप्ति होती है।

जब मैं था तब हरि नहीं अब हरि हैं मैं नाँहि।

सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माँहि ॥

यहाँ हरि से तात्पर्य निराकार ब्रह्म से है तथा दीपक ज्ञान का प्रतीक है।

मीराबाई जी ने अपने पदों में हरि अर्थात श्री कृष्ण जी के गुणों का वर्णन किया है। मीराबाई के हरि ईश्वर का साकार रूप हैं। मीराबाई जी ने श्रीकृष्ण जी को ही अपना ईश्वर तथा स्वामी मानकर उन्हीं की आराधना की है। मीराबाई जी की भक्ति में दास्यभाव है। वे अपने आराध्य श्री कृष्ण की सेवा एक सेविका के रूप में करना चाहती हैं–

स्याम म्हाने चाकर राखो जी, गिरधारी लाला म्हाँने चाकर राखो जी।

कबीरदास जी की भक्ति में ज्ञान की महत्ता अधिक है, वहीं मीराबाई की भक्ति में समर्पण भाव है

13. (क) हरिहर काका घर के बुजुर्ग थे। उनकी देखभाल तथा उनका सम्मान करना परिवार के अन्य सदस्यों का कर्तव्य था। वे अपने भाइयों के परिवार के साथ ही रहते थे तथा उन्हें ही अपना मानते थे। उनके भाई तथा उनका परिवार उनसे उनकी जमीन हड़पना चाहते थे। इसीलिए उन पर बार-बार जमीन अपने नाम लिख देने का दबाव डालते रहते थे। उन्होंने उनके साथ मारपीट कर उनकी जमीन को हथियाना चाहा। अपनों द्वारा किए गए इस व्यवहार से हरिहर काका मानो आसमान से जमीन पर आ गिरे। शरीर से अधिक चोट उनके मन पर लगी थी। इसी कारण उन्होंने मौन धारण कर लिया था।

हमें अपने बुजुर्गों का उचित सम्मान करना चाहिए। यदि हरिहर काका के परिवार वाले उनका सम्मान करते तो न तो हरिहर काका को ही मानसिक यातना से गुजरना पड़ता और न ही उनके परिवार को जमीन से हाथ धोना पड़ता। बुजुर्गों के प्रति ऐसा अमानवीय व्यवहार कहीं-न-कहीं हमारी भारतीय संस्कृति के विरुद्ध है। अतः हम सभी को बुज़ुर्गों को प्रेम और आदर देना चाहिए तभी एक आदर्श समाज का निर्माण संभव है।

(ख) मास्टर प्रीतमचंद बच्चों के पीटी सर थे। बच्चों को अनुशासित रखना उनका कर्तव्य था। बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए उन्हें अनुशासन में रखना उचित है परंतु बच्चों के साथ मार-पीट करना अमानवीय व्यवहार है। अनुशासन में रखने के लिए मार-पीट करना अनुचित है। बच्चों का कोमल हृदय अत्यंत भावुक होता है। मारपीट का उनके व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इससे बच्चों का मानिसक विकास उचित रूप से नहीं हो पाता है। वहीं दूसरी ओर हेडमास्टर मदनमोहन शर्मा जी बच्चों के साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार रखते थे। उनकी उपस्थिति में बच्चे खुश रहते थे। उनके द्वारा पढ़ाया गया विषय बच्चों को अच्छा लगता था। अतः बच्चों के शारीरिक तथा मानसिक विकास के लिए स्नेह तथा प्रोत्साहन अति आवश्यक है। यदि बच्चे कुछ गलत करें तो उन्हें रोकने के लिए अनुशासित करना भी आवश्यक है परंतु मारपीट कर उन्हें कुंठित करना उचित नहीं है।

(ग) टोपी शुक्ला एक ब्राह्मण परिवार से था जो पूरब की बोली बोलना जानता था। जबकि इफ़्फ़न मुस्लिम परिवार से था। इफ़्फ़न के घर में उर्दू ज़बान बोली जाती थी। इफ़्फ़न की दादी एक मौलाना की पत्नी थी परंतु उनके मायके में पूरब की भाषा बोली जाती थी। इतने वर्ष ससुराल में बिताने के बाद भी उन्होंने अपनी स्वच्छंद विचारधारा को नहीं बदला था। टोपी जब भी इफ़्फ़न के घर आता तो उन्हीं के पास बैठता था क्योंकि एकमात्र वो ही उसकी भाषा का मजाक नहीं उड़ाती थी। वरना उसके अपने घर में तो सभी इस भाषा को गँवारों की भाषा मानकर उसका तिरस्कार ही करते थे। इसी कारण वह जब भी इफ़्फ़न के घर जाता तो दादी की प्यार भरी बोली सुनकर उसे अपनेपन का एहसास होता था। उसे वहाँ पर प्रेम और सम्मान मिलता था जो प्रेम और सम्मान उसे अपने घर वालों से नहीं मिल सका। इधर इफ़्फ़न की दादी भी भरे-पूरे घर में स्वयं को अकेली महसूस करती थीं। दोनों एक-दूसरे के बिना अधूरे थे। एक-दूसरे को पाकर दोनों पूरे हो चुके थे।

14. (क) **भारत : विश्वगुरु के रूप में उभरता देश**

भारतीय सभ्यता को विश्व की प्राचीन सभ्यताओं में गिना जाता है। भारत सदा ही विश्वगुरु रहा है परंतु आज सभी देश कहीं न कहीं भारत का अनुकरण कर रहे हैं। प्राचीन समय से भारत आध्यात्मिक रूप से सभी देशों को अच्छाई के लिए प्रेरित करता रहा है। आज हमारा देश विज्ञान के क्षेत्र में भी विश्व स्तर पर अग्रणी है। विश्व में किसी भी देश पर जब कोई संकट आता है तब भारत आपसी मनमुटाव को भूलकर पूरी शांति से सहायता पहुँचाने में अग्रिम भूमिका निभाता है। टर्की देश में आया भूकंप तथा रशिया और यूक्रेन के बीच हो रहा युद्ध इसी तथ्य को प्रमाणित करता है। विज्ञान के क्षेत्र में भी भारत ने जो उपलब्धि प्राप्त की है, उसका लाभ पूरे विश्व तक पहुँचाया है। कोरोना महामारी के प्रभाव से जब पूरा विश्व आक्रांत था उस समय भारत भी चुनिंदा देशों में से एक था जिसने वैक्सिन का आविष्कार कर अनेक देशों तक इसे पहुँचाया। भारत मात्र एक ऐसा देश है जो विश्व को मानवता के धर्म का पालन करने की सीख देता है। भारतीय संस्कृति से प्रभावित होकर आज अनेक देश उसका साथ देने के लिए तत्पर हैं। अनेक देशों ने भारतीय संस्कृति को अपनाकर हमारे देश को सम्मान दिया है। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि आज सभ्यता, संस्कृति, मानवता, विज्ञान तथा व्यापार के क्षेत्र में भारत विश्वगुरु के रूप में उभर रहा है जिसका अनुकरण अनेक देश कर रहे हैं।

(ख) **प्रकृति के जल संचय की व्यवस्था**

प्रकृति ने जल संचय की व्यवस्था बड़े ही नायाब ढंग से की है। सर्दी के समय प्रकृति बर्फ के रूप में जल संग्रह कर लेती है। पर्वतों पर बर्फ का जमाव होता है। गर्मी के समय यही बर्फ पिघलकर लोगों को जल के रूप में प्राप्त होती है। गर्मी में पानी के लिए जब समस्त संसार व्याकुल होता है तो उस समय यही बर्फ पिघलकर जलधारा बनकर नदियों को भर देती है। नदियों के रूप में बहती यह जलधारा अपने किनारे बसे नगर तथा गाँवों में जल संसाधन के रूप में तथा नहरों के द्वारा एक विस्तृत रूप में सिंचाई करती है तथा अंत में सागर में जाकर मिल जाती है। सागर से फिर वाष्प के रूप में जलचक्र की शुरुआत होती है। प्रकृति ने बड़े ही अद्भुत तरीके से जल चक्र की व्यवस्था की है। ऐसे में एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते हम सभी का यह कर्तव्य बनता है कि जल को बर्बाद न कर उसका सदुपयोग करें। पृथ्वी पर जनसंख्या अधिक होने के कारण पेय जल अत्यंत कम उपलब्ध है। अतः हमें जल को सँभालकर और बचाकर रखना चाहिए ताकि आने वाले समय में भी आवश्यकतानुसार हमारी आने वाली पीढ़ी को जल उपलब्ध हो सके।

(ग) **मन के हारे हार है मन के जीते जीत**

मन के हारे हार है मन के जीते जीत

अर्थात जो व्यक्ति मन से हार मान लेता है वह वास्तविक अर्थों में हार जाता है परंतु जो व्यक्ति बार-बार विफल होने पर भी प्रयास करना नहीं छोड़ता अर्थात मन से हार स्वीकार नहीं करता वही व्यक्ति वास्तविक अर्थ में विजयी होता है। यह जीवन

एक संघर्ष है। जीवन के कर्मपथ पर चलने पर मनुष्य को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इन कठिनाइयों से संघर्ष करते समय कई बार मनुष्य हार मान लेता है। परंतु जो इन परिस्थितियों के आगे घुटने नहीं टेकता तथा निरंतर प्रयास करता रहता है उसी को जीत का गौरव प्राप्त होता है। कड़ी व लंबी साधना से ही सफलता की प्राप्ति होती है। अक्सर ऐसा होता है कि सफलता न मिलने से मनुष्य टूटने व बिखरने लगता है, हार स्वीकार कर लेता है। ऐसे समय में हमें उन लोगों से प्रेरणा लेनी चाहिए जिन्होंने हार से न घबराकर निरंतर प्रयास कर जीत हासिल की है। बचपन में हम सभी ने उस मकड़ी की कहानी तो सुनी ही होगी जो बार-बार जाल को बुनती है और बार-बार जाल टूट जाने पर भी प्रयास करना नहीं छोड़ती और अंततः जाल को बुनने में सफल हो जाती है। अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए हमें मन से हार कभी नहीं माननी चाहिए तथा निरंतर प्रयास कर सफलता प्राप्त करनी चाहिए।

15. (क) सेवा में

स्वास्थ्य अधिकारी

दिल्ली नगर निगम (पश्चिमी क्षेत्र), दिल्ली

दिनांक : 29 अगस्त, 20xx

विषय : जलभराव के संबंध में।

महोदय,

इस पत्र के माध्यम से मैं य०र०ल० कॉलोनी का अध्यक्ष होने के नाते आपको यह सूचित करना चाहता हूँ कि बारिश के कारण हमारी कॉलोनी के नाले पूरी तरह से भर चुके हैं। जगह-जगह नाले का पानी सड़कों पर भरने लगा है। इससे यहाँ के लोगों को असुविधा हो रही है। बच्चों को विद्यालय जाने में तथा कर्मचारियों को कार्यालय जाने में अत्यंत दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। गंदगी के कारण मोहल्ले में मच्छर भी पनप रहे हैं जिससे बीमारी का खतरा भी बढ़ रहा है। मैंने यहाँ के सफाई कर्मचारियों से नालों की सफाई करने का अनुरोध किया, परंतु उनकी तरफ से कोई कार्यवाही नहीं की गई है।

अतः मेरा आपसे अनुरोध है कि इस विषय पर विचार कर यहाँ के सफाईकर्मियों को नालों की सफाई करने का आदेश दें ताकि यातायात की असुविधाएँ समाप्त हो सकें।

धन्यवाद सहित

मानस त्रिवेदी

अथवा

(ख) परीक्षा भवन

नई दिल्ली

दिनांक : 20 मार्च, 20xx

हिन्दुस्तान टाइम्स

य०र०ल० नगर

नई दिल्ली – 110002

विषय : दंगों को रोकने हेतु सुझाव।

महोदय,

मेरा नाम निमेष दत्ता है। मैं भारत का एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते आपसे यह अनुरोध करता हूँ कि आप अपने समाचार-पत्र में सरकार तथा पुलिस विभाग को जागरूक करने के लिए एक लेख प्रकाशित करने की कृपा करें, जिसमें शहर में हो रहे दंगों को रोकने के लिए सुझाव दिए जाएँ। वैसे तो पुलिस अपना काम ईमानदारी से कर रही है परंतु दंगाइयों का आतंक अपनी चरम सीमा पार कर चुका है। ऐसे में शहर में पुलिस के गश्त को बढ़ाना चाहिए। साथ ही साथ पुलिस को

दंगाइयों के साथ और अधिक कठोर व्यवहार करने की छूट देनी चाहिए ताकि दंगाइयों के मन में भय उत्पन्न हो सके। कुछ हेल्पलाइन नंबर देने चाहिए ताकि सर्वसाधारण लोग पुलिस से संपर्क बना सके।

आशा करता हूँ कि आप मेरा यह अनुरोध स्वीकार कर इसे अपने लेख में छापेंगे ताकि समाज को इसका लाभ मिल सके।

सधन्यवाद

निमेष दत्ता

16. (क)

केंद्रीय विद्यालय, य०र०ल० नगर

सूचना

कवि सम्मेलन का आयोजन

दिनांक : 12 मई, 20xx

आप सभी विद्यार्थियों को यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता होगी कि लोगों में देशभक्ति की भावना जगाने के लिए विद्यालय परिसर में देशभक्ति पूर्ण कविता-पाठ का आयोजन किया जा रहा है जिसमें आप सभी इच्छुक विद्यार्थी भाग लेकर इस कार्यक्रम को सफल बना सकते हैं। इच्छुक विद्यार्थी अपनी कक्षा के मुख्य शिक्षक से कार्यक्रम में भाग लेने के लिए अपना नामांकन करवा सकते हैं।

कार्यक्रम का विवरण इस प्रकार है–

समय : शाम 4 बजे

स्थान : विद्यालय सभागार

दिनांक : 28 मई, 20xx

विद्यालय सचिव

क०ख०ग

अथवा

(ख)

नवजागरण क्लब, य०र०ल० नगर

सूचना

रक्तदान शिविर का आयोजन

दिनांक 12 मई, 20xx

सभी नागरिकों को सूचित किया जा रहा है कि नवजागरण क्लब की ओर से क्लब में दिनांक 28 मई से 30 मई तक अ०ब०स० अस्पताल के सहयोग से एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया जा रहा है। अतः आप सभी से यह अनुरोध है कि स्वस्थ और इच्छुक नागरिक इस अच्छे कार्य में अपना सहयोग देकर इसे सफल बनाने में हमारी सहायता करें। आपका यह अमूल्य योगदान किसी को जीवनदान दे सकता है।

स्थान : माध्यमिक विद्यालय परिसर

क०ख०ग० नगर

समय : प्रातः 9:00 बजे से शायं 5:00 बजे तक

नवजागरण क्लब

सचिव

अ०ब०स० अस्पताल

17. (क)

इंडियन (स्वदेशी)

स्वदेशी वस्तुओं को अपनाएँ

विदेशी वस्तुओं को दूर भगाएँ।

भारतीय जीवन शैली का यही आधार

स्वदेशी वस्तुओं को अपनाकर करें जीवन को साकार

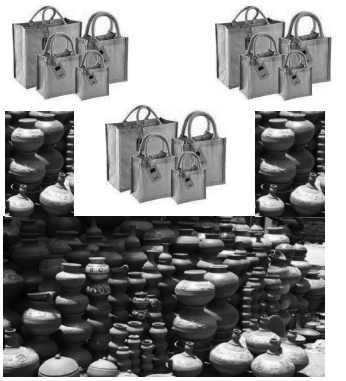

स्वदेशी जागरण मंच द्वारा जनहित में जारी

अथवा

(ख)

जल ही जीवन है **जल ही जीवन है**

जल है तो कल है

पृथ्वी की सतह पर दो तिहाई जल है
परंतु पीने योग्य जल सीमित है।

हम सबका यह नारा है
पानी को बचाना है।

जल है सबके जीवन का आधार,
जल को बचाकर करें अपना भविष्य साकार।

भारत सरकार के सौजन्य से लोकहित में जारी

18. (क) **एकता में बल**

एक समय की बात है एक गाँव में एक किसान रहता था। खेतों में खेती करके उससे जो अनाज मिलता था उससे वह अपना तथा अपने पूरे परिवार का निर्वाह करता था। उसके चार पुत्र थे। चारों आलसी थे तथा हमेशा एक-दूसरे से लड़ते रहते थे। किसान उनके इस व्यवहार से हमेशा दुखी रहता था। एक दिन वह बहुत बीमार पड़ गया। उसे यह चिंता सताने लगी कि उसके बाद उसके बच्चों का क्या होगा। बहुत सोच-विचार कर उसने एक दिन अपने बेटों को बुलाया और एक-एक लकड़ी लाने को कहा। चारों लड़के किसान की आज्ञानुसार एक-एक लकड़ी लेकर उपस्थित हो गए। फिर किसान ने उनसे सभी लकड़ियों को बाँधने को कहा। सभी ने उसे बाँध दिया। अब किसान ने चारों लड़कों से उस लकड़ी के गट्ठर को तोड़ने को कहा। एक-एक कर चारों ने प्रयास करके देखा परंतु किसी से भी वह लकड़ी का गट्ठर टूट नहीं सका। इसके बाद किसान ने लड़कों से उस

गट्ठर को खोलने के लिए कहा। लड़कों ने वह गट्ठर खोल दिया। इसके बाद किसान ने सभी लड़कों को एक-एक लकड़ी तोड़ने के लिए कहा। सभी ने बड़ी ही आसानी से वह तोड़ दिया। किसान ने अपने पुत्रों को समझाते हुए कहा कि एकता में बड़ा बल होता है। यदि तुम सभी इस लकड़ी की भाँति मिल-जुलकर एक साथ रहोगे तो कोई भी तुम्हारा कोई नुकसान नहीं कर सकेगा। चारों भाइयों को बात समझ में आ गई। अब वे मिलजुलकर एक साथ खुशी-खुशी रहने लगे।

अथवा

(ख) प्रेषक – mno@gmail.com

प्राप्तकर्ता – abc@gmail.com

प्रतिलिपि (सीसी) – xyz@gmail.com

गोपनीय प्रतिलिपि (बीसीसी) – pqr@gmail.com

विषय – सीवर की मरम्मत के लिए अनुरोध हेतु।

महोदय,

आपसे विनम्र निवेदन है कि हमारी सोसाइटी का मुख्य सीवर टूट गया है। इसी कारण सीवर का गंदा पानी सड़क पर आ गया है। इसके कारण हमारी सोसाइटी में बहुत गंदगी फैल रही है। इससे भयानक बीमारियाँ भी फैल सकती हैं। इसीलिए मैं आपसे यह अनुरोध करता हूँ कि जल्दी से जल्दी इसकी मरम्मत करवाने की कृपा करें।

आशा करता हूँ कि आप मेरा यह अनुरोध स्वीकार करेंगे और शीघ्र ही कोई कार्यवाही करेंगे।

सधन्यवाद

भवदीय

क०ख०ग०